DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. college, Bara chakia
BRABU—Muzaffarpur

B.A. (Hons.) part—I
Subject—Sanskrit
Paper—I

5×3=15 Marks

कारक सूत्र- व्याख्या

24. पराजेरसोढः (1/4/26)

'परा' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु के प्रयोग में असह्य पदार्थ की अपादान संज्ञा होती है। यथा- सः अध्ययनात् पराजयते (वह अध्ययन से हारता है)— यहाँ 'परा' पूर्वक 'जि' धातु का प्रयोग है और ग्लानि/हार का हेतु असह्य अध्ययन है, अतः इसको 'पराजेरसोढः' सूत्र अपादान संज्ञा होने पर पंचमी विभक्ति हुई है। ग्लानि जिससे प्राप्त हो वह असह्य होता है, अतएव यहाँ ग्लानि का हेतु होने से तृतीया प्राप्त थी, उसको बाधकर यह अपादान संज्ञा हुई है कुछ अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं- रावणः रामात् पराजयते, अलसः अध्ययनात् पराजयते आदि।